IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

महात्मा गांधीजी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन तथा वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता

Author: Pramod kumar Roy, Ph.D. Scholar.

Singhania University, Jhunjhunu, Rajasthan.

Co-Author: Dr. Shivkant Sharma

प्रस्तावना

शिक्षा ज्ञान, उचित आचरण, तकनीकी दक्षता, विद्या आदि को प्राप्त करने की प्रक्रिया को कहते हैं। शिक्षा में ज्ञान, उचित आचरण और तकनीकी दक्षता, शिक्षण और विद्या प्राप्ति आदि समाविष्ट हैं। इस प्रकार यह कौशलों व्यापारों या व्यवसायों एवं मानसिक, नैतिक और सौन्दर्यविषयक के उत्कर्ष पर केंद्रित है।

शिक्षा, समाज एक पीढ़ी द्वारा अपने से निचली पीढ़ी को अपने ज्ञान के हस्तांतरण का प्रयास है। इस विचार से शिक्षा एक संस्था के रूप में काम करती है, जो व्यक्ति विशेष को समाज से जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा समाज की संस्कृति की निरंतरता को बनाए रखती है। बच्चा शिक्षा द्वारा समाज के आधारभूत नियमों, व्यवस्थाओं, समाज के प्रतिमानों एवं मूल्यों को सीखता है। बच्चा समाज से तभी जुड़ पाता है जब वह उस समाज विशेष के इतिहास से अभिमुख होता है।

शिक्षा व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्व का विकसित करने वाली प्रक्रिया है। यही प्रक्रिया उसे समाज में एक वयस्क की भूमिका निभाने के लिए समाजीकृत करती है तथा समाज के सदस्य एवं एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए व्यक्ति को आवश्यक ज्ञान तथा कौशल उपलब्ध कराती है। शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा की 'शिक्ष्' धातु में 'अ' प्रत्यय लगाने से बना है। 'शिक्ष्' का अर्थ है सीखना और सिखाना। 'शिक्षा' शब्द का अर्थ हुआ सीखने-सिखाने की क्रिया।

हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को बीसवीं सदी का युगपुरुष भी कहा जाता हैं. उनका जीवन आदर्शों एवं मूल्यों पर पूर्ण रूप से आधारित था. वे प्रयोजनवाद के विचारों से गहरे प्रभावित थे. दुनिया भर में आज गांधीजी को महान नेता एवं समाज सुधारक के साथ साथ शिक्षा दार्शनिक के रूप में भी जाना जाता हैं. उनका मानना था कि समाज की उन्नति में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका हैं |

शिक्षा के प्रति इनकी विशेष सोच थी, जो कालान्तर में गांधीजी के शिक्षा दर्शन के रूप में जानी जाती हैं. वे शिक्षा के माध्यम से शोषण विहीन समाज का निर्माण करना चाहते थे. जहाँ किसी तरह जाति, वर्ग, लिंग का भेद न हो, सभी समरसता के साथ जी सके. उनका मानना था कि समाज के प्रत्येक सदस्य का शिक्षित होना जरुरी हैं, शिक्षा के बगैर एक आधुनिक समाज का सपना असम्भव ही हैं.

गांधीजी का शिक्षा दर्शन बेहद व्यापक एवं जीवनोपयोगी हैं. उन्होंने शिक्षा के मुख्य सिद्धातों, उद्देश्यों तथा शिक्षा की योजना को मूर्त रूप देने का प्रयत्न किया. गांधीजी का आधुनिक शिक्षा दर्शन उन्हें समाज में एक शिक्षाशास्त्री का दर्जा दिलवाता हैं. उन्होंने बुनियादी शिक्षा के क्षेत्र में जो योगदान दिया, वह अद्वितीय था.

भारत में शिक्षा को स्वावलंबी बनाने की दिशा में उन्होंने 3H की अवधारणा प्रस्तुत की, गांधी जी का मानना था कि बच्चों को हार्ट, हैण्ड और हेड (भावात्मक, गत्यात्मक और बौद्धिक) शिक्षण कराया जाना चाहिए. जिसमें ये तीनों अंग सक्रिय हो. देश को मजबूत और आत्मनिर्भर बनाने में शिक्षा एक महत्वपूर्ण टूल हैं जिसकी मदद से हम देश को स्वालम्बी बना सकते हैं |

सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा

- **राय , एम . (1986) ने अपने शोधग्रंथ " पंडित मदनमोहन मालवीय के शैक्षिक विचारों का अध्ययन** में उनके शिक्षा के उद्देश्यों , महत्व और प्रकृति का अध्ययन किया और पाया कि पंडित जी के अनुसार विद्यार्थी का जीवन सादा होना चाहिए , विनम्रता विद्यार्थी के लिए आभूषण की तरह है तथा विद्यार्थियों में स्वअनुशासन की भावना विकसित की जानी चाहिये ।
- **आनन्ता शर्मा (2000) ने महात्मा गांधी एवं रवीन्द्र नाथ टैगोर की शैक्षिक विचारधारा का तुलनात्मक अध्ययन किया** । उन्होंने अपने अध्ययन में दोनो महान विभूतियों के अनुसार शिक्षा के विभिन्न शिक्षा का अर्थ , उद्देश्य , शिक्षण विधि , शिक्षक , विद्यालय तथा शिक्षा के अन्य पक्ष यथा स्त्री शिक्षा तथा व्यवसायिक शिक्षा पर उनके विचारो का वर्णन किया तथा उनका तुलनात्मक विश्लेषण किया जिसमें उन्होंने दोनो के शैक्षिक विचारो में कुछ समानतायें तथा कुछ असमानतायें पायी ।
- **शर्मा , श्रीमती वीना (2009) ने अपने शोधग्रंथ " पं . मदनमोहन मालवीय एवं महात्मा गाँधी का शिक्षा दर्शन : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन "** में मालवीय जी तथा गाँधीजी के शिक्षा दर्शनों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया तथा शिक्षा के उद्देश्यों , महत्व और प्रकृति के बारे में विचार व्यक्त किये ।

अध्ययन का महत्व

महात्मा गांधी जी का शैक्षिक चिंतन वर्तमान समय में शिक्षा जगत में एक नई प्रकार की किरणें बिखेर सकता है क्योंकि वर्तमान शिक्षा जगत को जिन लक्ष्यों और आदर्शों की अधिक आवश्यकता है जो महात्मा गांधी जी के शैक्षिक चिंतन में निहित हैं । इसी कारण से शोधकर्ती ने महात्मा गांधी जी के शैक्षिक चिंतन का अध्ययन तथा वर्तमान भारतीय समाज में उसकी सार्थकता नामक विषय शोध हेतु चुना है । अतः शोधकर्ती ने अपने शोध के माध्यम से महात्मा गांधी जी के शैक्षिक चिंतन को जानने की कोशिश की ताकि उनके शैक्षिक चिंतन का अध्ययन करके वर्तमान भारतीय समाज में उसकी महत्व को अपनाया जा सके । भारत में वर्तमान समय में जो शिक्षा पद्धति प्रचलित है । वह विद्यार्थियों के बहुमुखी विकास में सहायक बनने के बजाय बाधक बन गई है । शैक्षिक मूल्य नष्ट हो गये हैं । इस प्रकार की परिस्थितियों में ऐसी शिक्षण प्रणाली की व्यवस्था की जानी उचित होगी , जो सम्पूर्ण समाज को ज्ञान प्रदान करे , नैतिक मूल्यों को पुनः स्थापित कर पायें । इन महत्वपूर्ण उद्देश्यों को पूरा करने में महात्मा गांधी जी के शैक्षिक चिंतन अवश्य ही सार्थक सिद्ध होगा ।

अध्ययन का उद्देश्य

- महात्मा गांधी जी के शैक्षिक चिंतन (शिक्षा के उद्देश्य) का अध्ययन करना।
- महात्मा गांधी जी के शैक्षिक चिंतन (पाठ्यक्रम) का अध्ययन करना।
- महात्मा गांधी जी के शैक्षिक चिंतन (शिक्षण विधि) का अध्ययन करना।

समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध में गांधी जी के शैक्षिक विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया। यह शोध अध्ययन महात्मा गांधी जी द्वारा प्रस्तुत शैक्षिक विचार - शिक्षा के उद्देश्य , पाठ्यक्रम , शिक्षण विधि तक ही सीमित है।

शोध विधि एवं प्रक्रिया

प्रस्तुत अध्ययन मूल रूप से महात्मा गांधी जी के ग्रन्थों , लेखों तथा अन्य स्रोतों के आधार पर उनके शैक्षिक चिंतन को सुव्यवस्थित करने और उनके शैक्षिक चिंतन के आधार पर शिक्षा के उद्देश्य , पाठ्यक्रम , शिक्षण विधि तथा गुरु - शिष्य सम्बन्ध को प्रस्तुत करने हेतु नियोजित किया गया। प्रस्तुत शोध में ऐतिहासिक विधि को अपनाया गया। प्रस्तुत अध्ययन में महात्मा गांधी जी द्वारा लिखित विभिन्न पुस्तकों , लेखों , पत्रों तथा अन्य अध्ययन सामग्री का अध्ययन किया गया।

तथ्यों का संकलन

तथ्यों के संकलन के लिए गांधी जी द्वारा लिखित साहित्य तथा अन्य लेखकों के द्वारा महात्मा गांधी जी के शैक्षिक चिंतन पर लिखे साहित्य का अध्ययन किया गया।

महात्मा गाँधी जी का शैक्षिक विचार तथा वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता

गाँधी जी के शिक्षा दर्शन का इनके जीवन दर्शन से घनिष्ठ सम्बन्ध हैं। गाँधी जी का मत है कि सत्य , अहिंसा , सेवा , निर्भयता आदि जीवन के ऐसे उद्देश्य है , जिनकी प्राप्ति केवल शिक्षा के द्वारा ही हो सकती हैं। इन्होंने कहा कि आर्थिक , सामाजिक , राजनैतिक तथा आध्यात्मिक उन्नति का एकमात्र आधार शिक्षा है। गाँधी जी का शिक्षा दर्शन इनके जीवन दर्शन का गतिशील पक्ष है। महात्मा गांधी का कहना है कि हमारे जीवन का इस भौतिक लोक तथा परलोक दोनों से सम्बन्ध है। अतः उन्होंने शिक्षा के उद्देश्य को भौतिकवाद एवं आध्यात्मवाद दोनों से स्थापित किया है। शिक्षा का उद्देश्य इन दोनों जीवनादशों की उपलब्धि एवं पूर्ति होनी चाहिए। महात्मा गांधी ने अपने शिक्षा दर्शन में शिक्षा के मुख्य उद्देश्यों को दो भागों में विभक्त किया हैं. पहला तात्कालिक उद्देश्य एवं दूसरा सर्वोच्च उद्देश्य जो इस प्रकार हैं. जिनकों नियमित शिक्षा के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता हैं.

- रोजगार का साधन: महात्मा गांधी के विचार में शिक्षा ऐसी हो बालक की आर्थिक आवश्यकताओ को पूरा करती हो, बालक शिक्षा के द्वारा आत्मनिर्भर बन सके तथा बेरोजगारी से मुक्त हो |
- सांस्कृतिक लक्ष्य: गांधीजी ने शिक्षा को संस्कृति का आधार माना हैं. बालक की शिक्षा ऐसी हो जो उनको अपनी संस्कृति तथा परम्पराओं व मूल्यों से जोडकर रखे |
- बालक का समग्र विकास: उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य बालक का शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास करने वाली हो |
- गांधीजी ने नैतिक एवं चारित्रिक उत्थान वाली शिक्षा पर बल दिया |

- महात्मा गांधी ने शिक्षा का पांचवा उद्देश्य मुक्ति बताया, सभी तरह के बन्धनों से मुक्ति वाली हैं. बालक को आध्यात्मिक स्वतन्त्रता हो. वे सत्य और ईश्वर प्राप्ति को शिक्षा के साथ समायोजित करना चाहते हैं, जिससे मानव अपने सर्वोच्च लक्ष्य को पा सके |

पाठ्यक्रम

गांधी जी की शिक्षा का लक्ष्य बालकों को समाज के लिए उपयोगी व आत्मनिर्भर बनाना था तथा वह शिक्षा को बालक का सर्वांगीण विकास करने वाला माध्यम मानते थे। इसलिए गांधी जी का पाठ्यक्रम पूर्णतः क्रिया - प्रधान था। वह पाठ्यक्रम को तभी उपयोगी मानते थे जब उसके द्वारा मानव जीवन के विभिन्न पक्षों , शारीरिक , मानसिक , आत्मिक , भावात्मक , सामाजिक , नैतिक व चारित्रिक विकास हो।

शिक्षण – विधियाँ

गांधी जी ने शिक्षण - विधियों पर विशेष ध्यान दिया और बताया कि जिस प्रकार शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए एक सुनियोजित पाठ्यक्रम की आवश्यकता होती है उसी तरह से इस पाठ्यक्रम को समझाने के लिए शिक्षण- विधियों की आवश्यकता होती है। शिक्षा के लिए समाज में अनेक प्रकार की शिक्षण विधियां प्रचलन में थी। उन्हीं को सुधारात्मक रूप में गांधी जी ने प्रस्तुत किया। गांधी जी प्रचलित शिक्षण विधियों को गलत मानते थे और शिक्षण विधियों को शिक्षक और विद्यार्थी के मध्य खाई के समान समझते थे। गांधी जी ने करके / क्रिया द्वारा सीखना , अनुभव द्वारा सीखना , शारीरिक अंगों के प्रयोग द्वारा सीखना तथा समन्वय शिक्षण विधियों का निर्माण किया।

गाँधी जी के अनुसार शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य भारत को बौद्धिक महाशक्ति के रूप में विकसित करना और ज्ञान की सुरक्षा करना होना चाहिए। छात्रों में योग्य नेतृत्व के गुणों का विकास व उद्यमी नेतृत्व के विकास की भी प्रबल आवश्यकता पर बल दिया है। पाठ्यक्रम सैद्धान्ति ज्ञान के साथ - साथ उद्यम सम्बन्धी ज्ञान और कुशलता के विकास में पूर्ण रूप से समर्थ हो तभी शिक्षा वर्तमान युग में उपयोगी हो सकेगी।

पाठ्यक्रम छात्रों में सृजनात्मकता और अभिनव परिवर्तन की प्रवृत्ति को सुदृढ़ करने में सक्षम तथा धर्म निरपेक्षता व समानता मूलक सिद्धान्तों पर आधारित होना चाहिए। महात्मा गाँधी के अनुसार छात्रों की रूचि के अनुसार शिक्षण विधि का चुनाव किया जाना चाहिए। वे प्रयोगशाला , करके सीखने , योजना विधि जैसी शिक्षण विधियों के पक्षधर हैं। शिक्षकों को देश का सबसे उत्तम बौद्धिक वर्ग होना चाहिए।

कलाम के विचार में शिक्षकों को छात्रों के लिए आदर्श की भूमिका निभाते हुए उन्हें अनुसरण के लिए आकर्षित करने व उन्हें अच्छे गुण प्रदान करने में समर्थ होना चाहिए। उन्होंने शिक्षकों के लिए टी. तोताद्री , आयंगर , श्रीनिवास रामानुजम तथा प्रो. एस. चन्द्रशेखर जैसे महान व्यक्तियों के उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। छात्रों के पास उच्च लक्ष्य होना चाहिए। प्रत्येक छात्र के पास एक आदर्श होना आवश्यक है। उनके अनुसार प्रत्येक छात्र को यह विश्वास रखना चाहिए कि वह जीवन की सभी अच्छी चीजों को पाने का हक रखते हैं जो ईश्वर द्वारा दी गयी हैं। अत : गांधी जी का शैक्षिक चिंतन , वर्तमान भारतीय समाज में आज भी सार्थक है।

निष्कर्ष

1. गाँधी जी ने शिक्षा का एक मात्र उद्देश्य मानव जीवन का सर्वांगीण विकास करना माना है।

2. गाँधी जी के शिक्षा के उद्देश्य राष्ट्र एवं समाज की आवश्यकताओं के अनुकूल हैं।

3. गाँधी जी का शिक्षा दर्शन आध्यात्मवादी होकर भी प्रयोगवादी है।

4. गांधी जी की शिक्षा में क्रिया द्वारा सीखने और स्वयं के अनुभवों के सिद्धांतों पर बल देकर व्यावहारिक शिक्षण पर बल दिया गया है।

5. गाँधी जी की समवाय पद्धति सभी दृष्टियों से परिपक्व है।

6. गाँधी जी ने शिक्षा के माध्यम से देशभक्त , राष्ट्रीय - प्रेम व विश्वबन्धुत्व की भावना का विकास माना है। 7. गाँधी जी की शिक्षा में व्यक्तिगत तथा सामाजिक विकास पर बल देकर दोनों में संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया गया है।

शैक्षिक निहितार्थ

शिक्षा व्यवसाय के लिए डॉ कलाम द्वारा बताये गये बौद्धित महाशक्ति के रूप में विकसित करने , ज्ञान की सुरक्षा करने , छात्रों में नैतिक नेतृत्व का विकास करने , रचनात्मकता व सृजनात्मकता का विकास जैसे उद्देश्य नव संजीवनी प्रदान करेंगे। भारत जैसे लोकतान्त्रिक देश के लिए नागरिक सशक्तता को सुदृढ़ करने में सक्षम तथा धर्म निरपेक्षता व समानतामूलक सिद्धान्तों पर आधरित पाठ्यक्रम उपादेय सिद्ध होगा। विद्यालय व सभी शिक्षण संस्थाओं को राष्ट्र की प्रयोगशालायें बनाकर समाज व राष्ट्र के निहितार्थ योग्य नागरिकों व कर्णधारों का निर्माण किया जा सकता है। भावी अनुसंधान हेतु सुझाव महात्मा गांधी जी के शैक्षिक चिंतन सम्बन्धी विचारों का अध्ययन के समान अन्य शिक्षाशास्त्रियों के शैक्षिक चिंतन सम्बन्धी विचारों का अध्ययन किया जा सकता हैं। महात्मा गांधी जी के शैक्षिक चिंतन सम्बन्धी विचारों का अन्य शिक्षाशास्त्रियों के शैक्षिक चिंतन सम्बन्धी विचारों से तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता हैं।

सन्दर्भ सूची

1. लाल, मुकुट बिहारी (1978) - महामना मदनमोहन मालवीय जीवन और नेतृत्व , तारा प्रकाशन वाराणसी।

2. राय पारस नाथ- अनुसंधान परिचय लक्ष्मी नारायन अग्रवाल , आगरा।

3. एम 0 बी 0 बुच (1991) - फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन , 1983-88 , वाल्यूम -1 (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद , नई दिल्ली)

4. शर्मा , वीना (2009) - पं 0 मदनमोहन मालवीय एवं महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन : एक विश्लेशणात्मक अध्ययन "।

5. सिंह , नवनीत कुमार (2009) - " भारतीय शिक्षा व्यवस्था में समाजवादी चिन्तकों का शिक्षा में योगदान और उसकी वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपादेयता।

6. जे 0 डी 0 पुथियाय (1978) - " स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन " पी 0 एचडी 0 , फिलासोफी , बोम्बे वि 0 वि 0 , उद्धत थर्ड सर्वे आफ रिसर्च एण्ड एजुकेशन पृष्ठ 46 .

7. वी ० एस ० नायर (1980) - " स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचार " पी 0 एचडी 0 , शिक्षा , केरला यू 0 1980 , उद्धृत थर्ड सर्वे आफ रिसर्च एण्ड एजुकेशन , पृष्ठ 45 .